परमात्म ऊर्जा

वर्तमान समय चारों ओर के पुरूषार्थियों के पुरूषार्थ में मुख्य दो बातों की कमज़ोरी व कमी दिखाई देती है, जिस कमी के कारण जो कमाल दिखानी चाहिए वह नहीं दिखा पाते, वह दो कमियां कौन-सी हैं? एक तरफ अभिमान, दूसरी तरफ है अनजानपन। यह दोनों ही बातें पुरूषार्थ को ढीला कर देती हैं। अभिमान भी बहुत सूक्ष्म चीज़ है। अभिमान के कारण कोई ने ज़रा भी कोई उन्नति के लिए इशारा दिया तो सूक्ष्म में न सहनशक्ति की लहर आ जाती है व संकल्प आता है कि यह क्यों कहा? इसको भी अभिमान सूक्ष्म रूप में कहा जाता है। कोई ने कुछ इशारा दिया तो उस इशारे को वर्तमान और भविष्य दोनों के लिए उन्नति का साधन समझकर उस इशारे को समा देना व अपने में सहन करने की शक्ति भरना - यह अभ्यास होना चाहिए।

सूक्ष्म में भी वृत्ति व दृष्टि में हलचल मचती है- क्यों, कैसे हुआ? इसको भी देही अभिमानी की स्टेज नहीं कहेंगे। जैसे महिमा सुनने के समय वृत्ति व दृष्टि में उस आत्मा के प्रति स्नेह की भावना रहती है, वैसे ही अगर कोई शिक्षा का इशारा देते हैं तो उसमें भी उसी आत्मा के प्रति ऐसे ही स्नेह की, शुभचिन्तक की भावना रहती कि यह आत्मा मेरे लिए बड़ी से बड़ी शुभचिन्तक है, ऐसी स्थिति को कहा जाता है देही अभिमानी। अगर देही अभिमानी नहीं हैं तो दूसरे शब्दों में अभिमान कहेंगे। इसलिए अपमान को सहन नहीं कर पाते। और दूसरे तरफ है बिल्कुल अनजान, इस कारण भी कई बातों में धोखा खाते हैं। कोई अपने को बचाने के लिए भी अनजान बनता है, कोई रियल भी अनजान बनता है। तो इन दोनों बातों के बजाए स्वमान जिससे अभिमान बिल्कुल खत्म हो जाए और निर्माण, यह दोनों बातें धारण करनी हैं। मन्सा में स्वमान की स्मृति रहे और वाचा में, कर्मणा में निर्माण अवस्था रहे तो अभिमान खत्म हो जाएगा। फिलॉस्फर हो गए हैं लेकिन स्पिरिचुअल नहीं बने हैं अर्थात् यह स्पिरिट नहीं आई है तो जो आत्मिक स्थिति में, आत्मिक खुमारी में रहते हैं- इसको कहा जाता है स्पिरिचुअल। आजकल फिलॉस्फर ज़्यादा दिखाई देते हैं, स्पिरिचुअल पॉवर कम है। स्पिरिट एक सेकण्ड में क्या से क्या कर दिखा सकती है! जैसे जादूगर एक सेकण्ड में क्या से क्या कर दिखाते हैं, वैसे स्पिरिचुअलिटी वाले में भी कर्त्तव्य की सिद्धि आ जाती। उनमें हाथ की सिद्धि होती है। यह है हर कर्म, हर संकल्प में सिद्धि स्वरूप।

सिद्धि अर्थात् प्राप्ति। सिर्फ प्वाइंट्स सुनना-सुनाना- इसको फिलॉसफर कहा जाता है। फिलॉसफी का प्रभाव अल्पकाल का पड़ता है, स्पिरिचुअलिटी का प्रभाव सदा के लिए पड़ता है। तो अभी अपने में कर्म की सिद्धि प्राप्त करने के लिए रूहानियत लानी है। अनजान बनने का अर्थ है कि जो सुनते हैं उसको स्वरूप तक नहीं लाते हैं। योग्य टीचर उसको कहा जाता है जो अपने शिक्षा स्वरूप से शिक्षा देवे। उनका स्वरूप ही शिक्षा सम्पन्न होगा। उनका देखना-चलना भी किसको शिक्षा देगा।

जैसे साकार रूप में कदम-कदम, हर कर्म शिक्षक के रूप में प्रैक्टिकल में देखा। जिसको दूसरे शब्दों में चरित्र कहते हो। किसको वाणी द्वारा शिक्षा देना तो कॉमन बात है लेकिन सभी अनुभव चाहते हैं। अपने श्रेष्ठ कर्म, श्रेष्ठ संकल्प की शक्ति से अनुभव कराना है।

कथा सरिता

रहस्यमयी पिरामिड

गर्मी से झुलसता रेगिस्तान, सूरज की तपिश से तपता हुआ। दूर क्षितिज पर कुछ नुकीले सिंहासन नज़र आते हैं, मानों रेत के बीच राजाओं का दरबार लगा हो। ये हैं मिस्र के पिरामिड, हज़ारों सालों से रेगिस्तान की कहानियों को अपने सीने में समेटे हुए।

आज रात चांद पूरा था और उसकी रोशनी पिरामिडों पर बिखर रही थी। एक युवा पुरातत्वविद, अली, इन प्राचीन संरचनाओं के रहस्य को सुलझाने के जुनून में वहाँ खड़ा था। वह मानता था कि पिरामिडों के अंदर कोई गुप्त कक्ष है, जिसके बारे में दुनिया को अभी तक पता नहीं चला है।

अपने साथी ओम के साथ उसने पिरामिड के एक छिपे हुए द्वार को ढूंढ निकाला था। थोड़ी देर हिचकिचाने के बाद, वे दोनों मशाल जलाकर उस अंधेरे द्वार से अंदर चले गए। भीतर का रास्ता संकरा और घुमावदार था। हर कदम पर उन्हें लगता था कि कोई उन्हें देख रहा है। दीवारों पर अजीबोगरीब चित्र बने हुए थे, जिन्हें वे समझ नहीं पाए। काफी दूर चलने के बाद रास्ता एक बड़े कक्ष में खुल गया।

कक्ष के बीचों बीच एक सुनहरा ताबूत रखा हुआ था। अली और ओम सांस रोके ताबूत के पास गए। ताबूत खोलने में उन्हें थोड़ी देर लगी, लेकिन आखिरकार वो पल आ गया। ताबूत के अंदर उन्हें सोने का मुकुट पहने एक फिरौन की मूर्ति मिली। उसके हाथों में एक सोने का पाषाण था,जिसपर अजीब निशान बने हुए थे।

पाषाण को ध्यान से देखने पर उन्हें लगा कि ये निशान किसी नक्शे का हिस्सा हैं। शायद ये पिरामिड के किसी गुप्त कमरे का रास्ता बताते हैं। अचानक, कक्ष की दीवारों पर अंकित चित्र चमक उठे और कमरे के फर्श में एक छिपा हुआ द्वार खुल गया।

अली और ओम एक-दूसरे को देखकर मुस्कुराए। रेगिस्तान के राज़ को सुलझाने का सिलसिला अभी तो शुरू हुआ था।

अली और ओम उत्सुकता से खुले हुए द्वार से नीचे उतरे। सीढ़ियां उन्हें एक लंबे गलियारे में ले गईं। गलियारे की दीवारों पर मशालों का सहारा लेकर चलते हुए उन्हें मिस्र के देवी-देवताओं के चित्र दिखाई दिए। कुछ दूर चलने के बाद गलियारा एक और कक्ष में खुल गया।

यह कक्ष पिछले वाले से बिल्कुल अलग था। चारों तरफ किताबें रखी हुई थीं, जिनके पन्ने किसी अज्ञात भाषा में लिखे हुए थे। कमरे के बीचों-बीच एक मेज पर एक ग्लोब रखा था, जो किसी जादुई क्रिस्टल से बना हुआ लग रहा था। जैसे ही अली ने उस ग्लोब को छुआ, कमरे में रोशनी फैल गई और दीवारों पर नक्शे उभर आए।

नक्शे में तारामंडल, नदियां, पहाड़ और कुछ अपरिचित शहर दिखाई दे रहे थे। अली को लगा कि यह कोई खज़ाने का नक्शा हो सकता है। उसी समय, ग्लोब के ऊपर से एक आवाज़ गूंजी। आवाज़ धीमी और गंभीर थी।

"स्वागत है, खोजियों। क्या तुम प्राचीन मिस्र के ज्ञान को प्राप्त करने के लिए तैयार हो?"

अली और ओम चौंक गए। यह फिरौन की आत्मा थी, जो हज़ारों साल बाद भी इस कक्ष की रक्षा कर रही थी। अली ने हिम्मत जुटाकर जवाब दिया, "हाँ, हम प्राचीन मिस्र के ज्ञान को सीखने और दुनिया के सामने लाने के लिए तैयार हैं।"

फिरौन की आत्मा मुस्कुराई, तो लो, यह ज्ञान तुम्हारा है। लेकिन इसे संभालना तुम्हारी ज़िम्मेदारी है।" फिर अचानक रोशनी कम होने लगी और आवाज़ भी धीमी पड़ गई। आखिरकार, सबकुछ शांत हो गया। अली और ओम ने रेगिस्तान के राज़ को तोड़ दिया था, प्राचीन मिस्र के खज़ाने को ढूंढ लिया था। अब उनके सामने चुनौति थी, इस ज्ञान को समझने और दुनिया के साथ साझा करने की।

रेगिस्तान की रात खामोश थी, लेकिन पिरामिड के अंदर खोज जारी थी। अली और ओम, फिरौन की आत्मा से मिले ज्ञान को समझने और उसका अध्ययन करने में लगे थे। उन्होंने प्राचीन भाषाओं के विशेषज्ञों और इतिहासकारों की मदद ली। धीरे-धीरे, उन नक्शों और चित्रों का रहस्य खुलने लगा।

उन्होंने जाना कि नक्शे मिस्र के विभिन्न खज़ाने और गुप्त स्थानों को दर्शाते हैं। कुछ नक्शे तो ऐसे भी थे जो गुप्त सुरंगों और भूमिगत कक्षों का रास्ता बताते थे। अली और ओम ने अपनी खोज जारी रखने का फैसला किया।

उन्होंने मिस्र सरकार और पुरातत्व विभाग से अनुमति ली और फिरौन के खज़ाने की खोज पर निकल पड़े। उनकी यात्रा उन्हें मिस्र के विभिन्न भागों में ले गई। उन्होंने रेगिस्तान के ऊंचे टीलों, घने जंगलों और प्राचीन मंदिरों का पता लगाया। रास्ते में, उन्हें कई खतरों का सामना करना पड़ा।

कुछ लोगों ने उन्हें रोकने की कोशिश की, तो कुछ ने उनसे खज़ाना छीनने की कोशिश की। लेकिन अली और ओम हार नहीं माने। उनकी हिम्मत और दृढ़ संकल्प ने उन्हें आगे बढ़ाया।

कई सालों की कड़ी मेहनत और लगन के बाद, अली और ओम को सफलता मिली। उन्होंने फिरौन के खज़ाने के कई हिस्सों को ढूंढ निकाला। इनमें सोने के आभूषण, चांदी के सिक्के, प्राचीन हथियार और दुर्लभ कलाकृतियां शामिल थीं।

उन्होंने अपनी खोजों को दुनिया के साथ साझा किया और मिस्र के इतिहास के बारे में हमारी समझ को गहरा करने में मदद ली। अली और ओम को उनकी बहादुरी और ज्ञान के लिए सम्मानित किया गया। लेकिन उनके लिए सबसे बड़ा इनाम यह था कि उन्होंने मिस्र के पिरामिडों के रहस्यों को सुलझाया और प्राचीन मिस्र के खज़ाने को दुनिया के सामने लाया।

सीखः यह कहानी हमें सिखाती है कि जिज्ञासा, साहस और दृढ़ संकल्प से हम कुछ भी हासिल कर सकते हैं।

पिलानी-झुंझुनू(राज.)। पिलानी सेवाकेन्द्र के ब्र.कु. दलीप शेखावत ने आर्कटिक स्वीडन के जमे हुए जंगल में 220 किलोमीटर की पांच दिवसीय आत्मनिर्भर दौड़, आइस अल्ट्रा को शिव बाबा का झंडा उठाए और शिव बाबा के झंडे को दिव्य शक्ति और मार्गदर्शन के प्रतीक के रूप में विजयी रूप से फिनिश लाइन पर लहराया। इस उपलिब्ध के साथ दुनिया की चार चरम अल्ट्रा-एंडयूरेंस दौड़ पूरी कर कीर्ति स्थापित किया।

फाज़िलगनर-उ.प्र.। शिवरात्रि के अवसर पर शोभायात्रा के उद्घाटन पश्चात् थाना प्रभारी पथरेवा हरेराम सिंह यादव को ईश्वरीय सौगात भेंट कर सम्मानित करते हुए स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. भारती बहन।